विशारद प्रथम वर्ष

तबला - पखावज

(पूर्णांक : 400, न्यूनतम : 180)
क्रियात्मक : 250 ; (मौखिक : 200 + मंच प्रदर्शन : 50)
न्यूनतम : 128
शास्त्र : 150, न्यूनतम : 52 : (26+26)

प्रथम प्रश्नपत्र

शास्त्र :-

1) ताल और ठेके मे अंतर, ताल की विस्तृत परिभाषा।
   सम, ताली, खाली, खंड / विभाग की जानकारी।
2) त्रिताल और झपताल में टुकड़ों को ठाह और दुगुन में लिपिबद्ध करने का अभ्यास।
3) निम्नलिखित की सोदाहरण परिभाषा ।
   आमद, पेशकार, कायदा, रेला, चलन, गतपरन, मुखड़ा, मोहरा.
4) समान-मात्रा संख्या के विभिन्न तालों का तुलनात्मक अध्ययन :-
   1) दीपचंदी- झूमरा, आड़ा चौताल - धमार
   2) रूपक - तेवरा (तिव्रा) - पश्तो
   3) त्रिताल, तिलवाड़ा, अध्धा - पंजाबी।
5) लय और लयकारी के परस्पर संबंध की जानकारी तथा व्याख्या।
6) भारतीय संगीत वाद्यों के वर्गीकरण का सिद्धांत। जानकारी।

द्वितीय प्रश्नपत्र

1) तबला अथवा पखावज वाद्य की उत्पत्ति एवम् विकास का संक्षिप्त अध्ययन।
2) तबला वादन में प्रयुक्त विभिन्न बाज : विशेषता और तुलना।
3) तबला अथवा पखावज के घराने और उनकी वादन विशेषता तथा किसी एक घराने की संपूर्ण जानकारी।

तबला - दिल्ली, लखनौ तथा पंजाब

पखावज - कुदऊसिंह, नाना पानसे, तथा नाथद्वार

4) i) पेशकार, कायदा, रेला तथा गत का तबला एकल वादन में स्थान एवम् महत्त्व।

ii) रेला, चक्रधार परन, स्तुतिपरन, बोलबाँट, आदेशी परन का पखावज वादन में स्थान एवम महत्त्व

5) निम्नलिखित तालों में से प्रत्येक में दो दमदार एवम् दो बेदम तिहाईयाँताललिपि में लिखना :-

1) तबला–त्रिताल, झपताल, आड़ाचौताल

2) पखावज – तेवरा, सूलताल, आदिताल

6) तबला / पखावज तथा बाँयें के वादन में संतुलन बनाने के लिये आवश्यक रियाज की पद्धति।

7) निम्नलिखित तबला वादकों का जीवन परिचय तथा सांगीतिक योगदान :—

उ. सलारीखाँ, उ. मुनीरखाँ, पं. कंठेमहाराज, उ. गामेखाँ, उ. करामतुल्लाखाँ, उ. इनाम अली खाँ, पं. पुरूषोत्तम दास पखावजी, पं. माधवराव अलगुटकर, पं. सखारामजी गुरव.

क्रियात्मक :

1) तबला/पखावज सुर में मिलाने का अभ्यास तथा हार्मोनियम पर विविध स्वरों के मध्यम एवम पंचम स्वरों को पहचानने की क्षमता।

2) रूपक, एकताल, सूलताल, चौताल, त्रिताल और झपताल इन तालों के ठेकों की दुगुन, तिगुन तथा चौगुन हाथ से ताली देकर पढना तथा बजाना।

3) (त्रिताल में निम्नलिखित का वादन) :-

धा) ''तिट'' शब्द युक्त दो कायदे (एक तिस्र तथा एक चतुस्र) चार पल्टे तथा तिहाई।

त्र) दो कायदे जिनमें ''तिरकीट'' शब्द का प्रयोग हुआ हो, चार पल्टे तथा तिहाई।

क) धिं (दिं) तिरकीटतक शब्द समूह युक्त एक रेला, चार पल्टे एवम तिहाई।

धि) धिरधिर बोल समूह युक्त एक रेला, चार पल्टे तथा तिहाई !

कि) न्यूनतम पाँच बंदिशे (गत टुकड़े)।

ट) दो दमदार तथा बेदम तिहाई।

(पखावज में निम्नलिखित वादन)

i) चौताल, धमार, तथा आदिताल में निम्नानुसार वादन पडार, तिस्र, तथा चतुस्र जाति के रेले, स्तुतिपरन, गतपरन, तथा बाल परन का वादन, फरमाईशी चक्रदार परने तथा नौहक्का तिहाईयाँ.

4) निम्नलिखित शब्द एवम शब्द समूहों के रियाज की पद्धति :—

धातिरकिटतक तिरकिट, धाति, धागेतिट, धिरधिर, धिनगिन, गदिगन, धुमकिट, धिटधिट धागेतिट, धेत् तगिन्न

5) दादरा तथा केहरवा ताल में कलापूर्ण लगियों का प्रदर्शन।

6) तबला – झपताल और सवारी ताल (15 मात्रा) में से प्रत्येक में दो कायदे (एक तिस्र तथा एक चतुस्र पल्टों सहित), एक रेला, दो दमदार तिहाई, और चार टुकडे।

पखावज – रूद्र तथा गजझंपा मे रेले, टुकड़े, परने, तिहाईयाँ बजाने का अभ्यास

7) गायन–वादन की साथसंगत।

8) अब तक के अभ्यासक्रम में आए हुए तालों मे विभिन्न मात्राओं की दमदार तथा बेदम तिहाईयाँ ।

9) विधिवत 30 मिनिट का मंच प्रदर्शन

अंकपत्रिका :

सूचना : 1) *इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 50 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है।*

2) *विद्यार्थी को सभी वादन लहरा के साथ करना होगा।*

3) *पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पूछे जाएँगे।*

4) मंच प्रदर्शन निमंत्रिकों के सम्मुख स्वतंत्र रूपसे होगा, जिसके लिए अतिरिक्त समय तथा 50 अंक निर्धारित किये गये है।

1)	तबले को स्वर मे मिलाने का अभ्यास तथा हार्मोनियम पर विविध स्वरों को बजाकर उनके मध्यम तथा पंचम स्वरों को पहचानना	– 10 अंक
2)	रूपक, एकताल, सूलताल, चौताल, त्रिताल, और झपताल के ठेकों को हाथ से ताली देकर दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में पढना तथा बजाना	– 15 अंक
3)	त्रिताल में इस वर्ष के पाठ्यक्रमानुसार वादन	– 50 अंक
4)	पाठ्यक्रम में दिए गये शब्द समूहों के रियाज की पद्धति का प्रदर्शन	– 15 अंक
5)	दादरा तथा कहरवा में कलापूर्ण लग्गियाँ	– 10 अंक
6)	झपताल में एक कायदा, एक रेला, चार टुकड़े और दो तिहाईयाँ	– 30 अंक
7)	सवारी में एक कायदा, एक रेला, चार टुकड़े और दो तिहाईयाँ	– 30 अंक
8)	विभिन्न मात्रा के तालों मे तिहाईयाँ	– 10 अंक
9)	गायन/वादन की साथ संगत	– 20 अंक
10)	सामान्य प्रभाव	– 10 अंक
	कुल मौखिक –	200 अंक

मंच प्रदर्शन –

1)	त्रिताल में सम्पूर्ण एकल वादन	30 अंक
2)	झपताल अथवा सवारी में एकल वादन	20 अंक
	कुल अंक –	50 अंक

विशारद द्वितीय वर्ष

तबला – पखावज

पूर्णांक : 400, न्यूनतम : 180
क्रियात्मक : 250, (मौखिक : 200 + मंचप्रदर्शन : 50) न्यूनतम : 128
शास्त्र : 150 न्यूनतम : 52 (26 + 26)

प्रथम प्रश्न-पत्र

शास्त्र :–

1) पं. भातखंडे एवम् पं. पलुस्कर तालिपि पद्धतियों का विस्तृत अध्ययन।
2) ताल के दश प्राणों का संक्षिप्त अध्ययन तथा क्रिया, अंग, जाति तथा यति का विस्तृत अध्ययन।
3) कर्नाटक एवम् उत्तर भारतीय ताल पद्धति का अध्ययन।
4) भारतीय संगीत में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों की पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों के साथ तुलना।
5) लय तथा लयकारी के अंतर का ज्ञान तथा निम्नलिखित तालों में आड, कुआड और बिआड़ लयकारी की बंदिशों कों सम से समतक तालिपि में लिखना।
   (1) त्रिताल (2) झपताल (3) धमार (4) सूलताल
6) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की उदाहरण सहित व्याख्या :
   उठान, त्रिपल्ली एवम् चौपल्ली गत, फरमाईशी गत, फरमाईशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, रौ, लग्गी, लडी तथा किस्म।
7) भारतीय शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोकसंगीत में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित वाद्यों का विवरण :
   तानपुरा, हारमोनियम, पखावज, मृदंगम, ढोलक, ढोलकी (नाल) खोल, संबल, गुदुम, एकतारा, तविल, शहनाई।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

1) तबला/पखावज वाद्य का भारतीय संगीत में स्थान महत्त्व एवम उपयोगिता तथा तबला / पखावज की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित विभिन्न मतों की समीक्षा।

2) धा) पेशकार, कायदा, रेला एवम् गत इन वादन प्रकारों के रचना सिद्धांत।

धी) ठेका, प्रस्तार, रेला, एवं गत परन इन वादन प्रकारों के रचना सिद्धांत।

3) तबला तथा पखावज वादन में प्रयुक्त होने वाले वर्णो के निकास की विस्तृत जानकारी।

4) शास्त्रीय, उप-शास्त्रीय और सुगम संगीत के साथ तबला / पखावज की संगति के सिद्धांतो का अध्ययन।

5) पखावज के विभिन्न घरानों की जानकारी।

6) अजराडा, फरूखाबाद एवम् बनारस घरानों की वादन विशेषतायें।

7) एकल तबला वादन :-

अ) वादन प्रकारों की प्रस्तुति का क्रम,

ब) प्रभाव कारक प्रस्तुतिकरण के गुणतत्त्व,

क) पढंत की आवश्यकता।

8) ताल निर्माण के नियम

9) निम्नलिखित वादकों का जीवन परिचय तथा सांगीतिक योगदान।

उ. नत्थुखाँसाहब, उ. शम्भु खाँ, उ. वाजीद हुसेन, उ. आबीद हुसेन, उ. चुडीया ईमाम बक्ष, पं. गोविंदराव बन्हाणपूरकर, पं. पर्वतसिंह, पं. अयोध्याप्रसाद।

क्रियात्मक :

(तबला के विद्यार्थी) :-

1) त्रिताल में निम्नानुसार वादन

अ) दिल्ली अथवा फरूखाबाद घराने का पेशकार विस्तार पूर्वक बजाना।

ब) 'त्रक' शब्द युक्त चतुस्र एवम त्रिस्र जाति के एक-एक कायदे को छह पलटे तथा तिहाई सहित बजाना।

क) 'धातंग घेतग' इस शब्द समूह युक्त त्रिस्र जाति के एक कायदे का, छह पलटे तथा तिहाई सहित वादन ।

ड) 'गेगेतीट' अथवा 'गेगेनागे' शब्द युक्त कायदा, छह पलटे तिहाई सहित बजाना ।

(पखावज के विद्यार्थी) :-

अ) चौताल, धमार, सूलताल, तीव्रा, अदिताल, में कुदऊसिंह, तथा नाना पानसे घराने की 2-2 बंदिशों की पढंत एवं वादन।

ब) उपर्युक्त मे से किन्ही दो तालों में धिरधिर एवं धिड़कना रेले, पल्टे का अपेक्षित तैय्यारी के साथ वादन ।

क) उपर्युक्त तालों में एक एक कमाली चक्रदार परन का वादन

ड) आदिताल तथा धमार मे दो दो बेदम तिहाईयाँ तथा $1\frac{1}{2}$ मात्रा के दमयुक्त सम संख्या तक का वादन ।

2) रेला :-

अ) 'धिरधिर' शब्द युक्त रेले का पाच पलटों एवम् तिहाई सहित अपेक्षित तैयारी में वादन ।

ब) 'दिंगनग' शब्द समुह युक्त पाच पलटे, तिहाई सहित वादन ।

3) गत :-

दो शुद्ध गतें (तिहाई सहित), दो चक्रदार गतें तथा दो त्रिपल्ली गतों का पढंत के साथ वादन

4) तिहाई :-

दो बेदम तथा दो $1^1/_2$ मात्राओं के दमयुक्त सम से सम युक्त वादन

5) निम्नलिखित तालों की दुगुन तिगुन व चौगुन हाथ से ताल देकर पढना तथा बजाना :-

एकताल झूमरा, सूलताल, धमार.

6) निम्नलिखित तालों मे से किसी एक ताल में 10 मिनीट का एकल वादन (परीक्षक के निर्देशानुसार वादन की प्रस्तुति करना) मत्ततात, रूद्रताल, आडाचौताल

7) तबला/पखावज सुर में मिलाना, बाद मे आधा सुर चढ़ाना या उतारकर मिलाना।

मंचप्रदर्शन :-

1) विद्यार्थी के इच्छानुसार 30 मिनिट तक स्वतंत्र तबला/पखावज वादन करने की क्षमता।

2) दीपचन्दी, कहरवा अथवा दादरा ताल में सुंदर लग्गियाँ।

अंकपत्रिका :

सूचना :- *1) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 60 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है।*

2) विद्यार्थी को सभी वादन लहरा के साथ साथ करना होगा।

3) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पूछे जाएँगे।

4) मंच प्रदर्शन निमंत्रितों के सम्मुख स्वतंत्र रूपसे होगा, जिसके लिए अतिरिक्त समय तथा 50 अंक निर्धारित किये गये हैं।

1) त्रिताल मे इस वर्ष के पाठ्यक्रमानुसार वादन करने की क्षमता 55 अंक

2) धिरधिर एवं ''दिंगनग'' इन शब्द समूहों से युक्त रेले का पल्टों एवं तिहाई सहित वादन 20 अंक

3) दो शुद्ध, दो चक्रदार तथा दो त्रिपल्ली गतों का पढ़ंत के साथ वादन 30 अंक

4) दो बेदम तथा दो $1\frac{1}{2}$ (डेढभाग) मात्रा की दम युक्त समसे सम तक तिहाई बजाने का अभ्यास 15 अंक

5) पिछले पाठ्यक्रम के तालों के अतिरिक्त एकताल, झूमरा, सूलताल तथा धमार ताल की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन हाथ से ताली देकर पढ़ना तथा बजाना 15 अंक

6) किसी एक ताल मे परीक्षक के निर्देशानुसार एकल वादन मत्ततात (9) रुद्रताल (11) आड़ा चौताल (14) 40 अंक

7) साथ संगत का अभ्यास 15 अंक

8) वाद्य को स्वर में मिलाना 10 अंक

कुल मौखिक - 200 अंक

मंच प्रदर्शन :

1) किसी ताल में 30 मिनिट का स्वतंत्र तबला वादन - 35 अंक

2) दीपचन्दी, कहरवा तथा दादरा में कलात्मक लग्गियाँ - 15 अंक

कुल 50 अंक